प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिनांक 15 अगस्त 1998 लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधन

देशवासी बहनो, भाइयो और प्यारे बच्चो, अपने स्वतंत्रता की 51वीं वर्षगांठ पर मेरी ओर से आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

देखते-देखते आधी शताब्दी बीत गयी, लगता है कल की बात है। पंडित जवाहरलाल नहेरू जी ने इसी स्थान पर पहली बार हमारा प्यार तिरंगा, नीले आसमान में फहराया था। उसके बाद प्रत्येक स्वतंत्रता दिवस पर, इस ऐतिहासिक लाल किले से, राष्ट्रीय ध्वज फहराने की परम्परा चलती आ रही है। मैंने कभी ये नहीं सोचा था, कि ये सौभाग्य एक दिन मुझे भी मिलेगा। एक गरीब स्कूल मास्टर के लड़के का, धूल और धुएँ से भरी बस्ती से उठकर, लाल किले की प्राचीर तक पहुँचना और स्वतंत्रता के पावन पर्व पर तिरंगा फहराना, ये भारतीय लोकतंत्र की शक्ति और क्षमता को उजागर करता है। हम सब जानते है, कि ये आजादी हमें सस्ते में नहीं मिली है। एक तरफ महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में, आजादी के हिंसात्मक आंदोलन में, लाखों नर-नारियों ने ये कारावास में ये यातनाएँ सहन की। तो दूसरी ओर हजारों क्रांतिकारीयों ने हंसते-हंसते फाँसी का तख्ता चूमकर, अपने प्राणों का बलिदान दिया। हमारी ये आजादी इन सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों और स्वतंत्रत सैनानियों की देन है। आइये हम सब मिलकर, इनको अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करें। और प्रतिज्ञा करें कि हम इस आजादी की रक्षा करेगें। भले ही इसके लिए सर्वस्व की आहुति क्यों ना देना पड़े। हमारा देश विदेशी आक्रमण का शिकार होता रहा है। पचास वर्षों के इस छोटे काल खण्ड में भी हम 4 बार आक्रमण के शिकार हुए। लेकिन हमने अपनी स्वतंत्रता और अखंडता अक्षुण रखी, इसका सर्वाधिक श्रेय जाता हमारे सैना के जवानों को। अपने घर और प्रियजनों से दूर अपना सर हथेली पर रखकर, ये रात दिन हमारी सीमा की रखवाली करते हैं। इसलिए हम अपने घरों में चैन की नींद सो सकते हैं।

सियाचीन की शुन्य से 32 अंश बर्फीली वादीयां हों या पूवांचल का घना जंगल, कक्ष या जैसलमेर का रेगिस्तान का इलाका हो, या हिन्द महासागर का सागर घहरा पानी सब स्थानों पर हमारा जवान चौकस खड़ा है। इन सभी जवानों को, थल सैना, वायु सैना, जल सैना के साथ-साथ अन्य सुरक्षा बलों से संबंधित हैं, मैं अपनी ओर से और आप सब की ओर से बहुत-बहुत बधाईयाँ देता हूँ। और इतना ही कहता हूँ :- 'हे भारत के वीर जवानो हमें तुम पर नाज है, हमें तुम पर गर्व है।'

सैना को समर्थन चाहिए जनता का। गत 50 वर्षो में किसानों और मजदूरों ने, खेती खलिहानों में, कलकारखानों में देश की दूसरी रक्षा पंक्ति को मजबूत किया है। हम ये भूल नहीं सकते, लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था - "जय जवान, जय किसान"। मानो हर कोई एक दूसरे के बिना अधूरा है। एक दूसरे के बिना अपूर्ण है। मैंने अब इसमें एक नया आयाम जोड़ा है "जय विज्ञान" 21वी सदी में देश की सुरक्ष, देश का विकास बीती सदी के साधनों से नहीं किया जा सकता। हमें अपनी सैनाओं को अत्याधुनिक बनाना पड़ेगा। जिससे किसी भी संकट का डटकर मुकाबला कर सकें। हमारी स्वतंत्रता और अखण्डता अक्षुण रख सकें। इसी उद्देश्य से, और केवल इसी उद्देश्य से हमने 11 और 13 मई को पोखरण में अणु विस्फोट किया था। पोखरण अणु विस्फोट, ये एक रात का खेल नहीं था। हमारे वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, टैक्नीसियनों और हमारे सुरक्षा बलों के बरसों की तपस्या का यह फल था। पच्चीस वर्ष पूर्व श्रीमति इंदिरा गांधी ने जिस कार्य की नीव रखी थी। मैंने उस पर ईमारत खड़ा करने का प्रयास किया है। मैं जानता हूँ, कि मैं केवल निमित्त मात्र हूँ। इस महान उपलब्धि का सेहरा

तो वैज्ञानिकों की कुसाग्र बुद्धि और जवानों की अतुलनीय मेहनत को जाता है। मैं इन सब को स्वतंत्रता दिवस के इस अत्यंत शुभ अवसर पर बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूँ।...(तालियां)

मैं आप सबका भी बहुत अभारी हूँ, कि आपने परीक्षा की इस घड़ी में मुझे पूर्ण समर्थन देकर होसला बढ़ाया। कुछ तत्वों को छोड़कर, हर भारतीय चाहे वो दुनिया के किसी भी कोने में खड़ा हो, उसने इस कदम का स्वागत किया है। मानों हम से हरेक का माथा उस दिन उन्नत हुआ, सीना चौड़ा हुआ। और हम एक स्वर से, ऊंचे स्वर से कहने लगे गर्व से कहो हम भारतीय हैं। क्योंकि उस दिन पोखरण में केवल अणु ऊर्जा का नहीं राष्ट्र की ऊर्जा का भी प्रकटीकरण हुआ था। इस क्षण में इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि भारत सदैव शांति का पुजारी था, है, और रहेगा।

हम शस्त्र का उपयोग आत्मरक्षा के लिए करना जानते हैं, और चाहते हैं। हम अणु अस्त्र का उपयोग आक्रमण के लिए नहीं करेंगे। और इसीलिए हमने नये अणु परीक्षण पर अपने ऊपर अपनी ओर से पाबंदी लगा दी है। हमने स्वयं होकर दुनिया से अणु अस्त्र का पहला प्रयोग ना करने का वादा किया है। हम ये सब न किसी के दबाब में कर रहे है, ना किसी के डर से। हमें केवल स्वेच्छा से इसलिए कर रहे हैं कि विश्व शांति और निशस्त्रीकरण में हमारी घहरी आस्था है। अणु अस्त्र रहित दुनिया, ये हमारा सपना है। इसे हम साकार करना चाहते हैं। प्रारंभ में दुनिया के कुछ राष्ट्रों ने राष्ट्रीय सुरक्षा की हमारी आवश्यकता की नीति और नियत पर संदेह किया। कुछ ने हम पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये। अब परिस्थिति बदल रही है। दुनिया भारत की भूमिका को धीरे-धीरे समझ रही है। हम उन्हें अपना दृष्टिकोण समझाने में सफल हो रहे हैं। इसके चलते कुछ आर्थिक प्रतिबंध डीले भी पड़ने लगे हैं। दुनिया की इस बदलती दृष्टि का हम स्वागत करते हैं। इसके साथ एक बात हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं, भारत एक महान देश है। हमारी जनता पराक्रमी है, अपने गौरव के लिए ये बहादुर जनता हर संकट का मुकाबला कर सकती है। इसका हमने इतिहास को बार-बार परिचय दिया है। मैं अहंकार से नहीं, विनम्रता से, अपमान के रूप में नहीं, चुनौती के रूप में नहीं, आत्मविश्वास से कहना चाहता हूँ, कि दुनिया की कोई भी ताकत हमें अपने निर्धारित मार्ग से दुर नहीं कर सकती। राष्ट्री की एकता, अखण्डता और सुरक्षा के लिए हम बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं। हम अपने पड़ोसी देशों से हम अपने संबंध सुधारना चाहते हैं। हम जानते हैं कि युद्ध जीतने का सबसे आसान तरिका युद्ध को न होने देना है। पाकिस्तान से हम किसी भी विषय पर, और किसी भी स्तर और कहीं भी बात करने के लिए तैयार हैं। आप सब जानते हैं कि कोलम्बो में सार्क सम्मेलन के अवसर पर मैंने इस बात की पहल की थी। मुझे थोड़ा सा दुख हुआ कि हमें अपेक्षित उत्तर नहीं मिला। फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है। इस मास के अन्त में दक्षिण अफ्रिका में होने वाली गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के अवसर पर मैं फिर संवाद का प्रयास करूंगा। मेरी मान्यता है कि दुनिया में कोई समस्या ऐसी नहीं है जिसकी बातचीत से हल न हो सके। इसलिए पाकिस्तान हो या चीन, हम सबसे मैत्री भाव से बातचीत करके आपसी समस्याओं का हल ढूंढने के लिए प्रयास करते रहेंगे। कुछ दिनों में जम्मु और कशमीर में उग्रवादीयों की कार्यवाइया बढ़ गयी है। उनके द्वारा हिमाचल में हुआ हत्याकाण्ड एक बड़े षड़यंत्र का भाग मालूम होता है। सीमा पार से प्रतिदिन होने वाली आतंकवादी कार्यवाइयां अघोषित युद्ध के समान है। सरकार ने इन घटनाओं को बहुत ही गम्भीरता से लिया है। हम पूरी ताकत के साथ इसका मुकाबला कर रहे हैं। और आतंकवाद को परास्त करके रहेंगे। व्यक्तिगत जीवन हो या राष्ट्रीय जीवन 51वीं वर्षगाठ बीते हुए अर्धशताब्दी के जीवन का लेखा-जोखा लेने का स्वर्णिम अवसर होता है। हम सब के लिए आज का क्षण विश्व महावलोकन का क्षण है। आज हम एक क्षण के लिए सिंह की तरह पीछे मुड़कर देखें और फिर 21वीं शताब्दी में छलांग लगाने के लिए अपने आप को तैयार करें। लेखा-जोखा लेते समय एक गलती अक्सर हो जाती है, हम अपनी ही उपलब्धी को कम

आंकते हैं, और कमजोरी को बढ़ा चढ़ाकर देखते हैं। इसके परिणाम स्वरूप देश में निराशा का वायुमण्डल छा जाता है। कभी-कभी देश में मैं निराशा का स्वर का बढ़ते हुए देखता हूँ। बात थोड़ी बहुत बिगड़ी भी होगी, लेकिन इतनी भी बिगड़ी भी नहीं है कि सुधारी न जा सके। हमारे शास्त्रों में कहा है आत्म प्रशंसा मुर्खो का लक्षण है, लेकिन अनावश्यक आत्म निंदा भी आत्म हत्या के समान है। मैं यर्थाथवादी दृष्टि से 50 वर्षो का लेखा-जोखा लेना चाहता हूँ।

जब हम आजाद हुए थे। तब कुछ पश्चिम के पंडितों ने भविष्यवाणियाँ की थी, कि हम जनतंत्र और स्वतंत्रता के लायक नहीं है। जलद ही बिखरकर के ये नष्ट हो जाएंगे। लेकिन आज हम गर्व से कह सकते है, कि न केवल हमने अपनी अखण्डता और स्वतंत्रता की रक्षा की है अपितु विश्व का सबसे बड़ा जनतंत्र सफलता पूर्वक चलाकर दिखाया है। जो राष्ट्रीय हमारे साथ आजाद हुए वो लगभग सभी कभी न कभी तानाशाही का या सैनाशाही का शिकार हुए। लेकिन हमने लोकशाही का द्विप हमेशा जलाये रखा।

आज की लोक सभा 12वी लोक सभा है। मैं हिन्दुस्तान का 11वां प्रधानमंत्री हूँ। छोटे से देहात की चौपाल से लेकर संसद तक से सत्ता परिवर्तन के होते हुए दृश्य को हमने देखा है। इस सबका श्रेय आपको जाता है। हर चुनाव में आपने ऐसा चमत्कार करके दिखाया कि सभी पण्डित ज्ञानी हथप्रब रह गये हैं। आपको बहुत-बहुत बधाई जब तक आप जागरूक हैं, हमारे जनतंत्र पर कोई आंच नहीं आ सकेगी। आज के स्वर्णजयंती समापन समारोह के अवसर पर एक महत्वपूर्ण तथ्य पर पूरे राष्ट्र को सोचना है। स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता सेक्यूलरवाद ये चारों एक दूसरे के पूरक हैं। हमें हर हालत में स्वतंत्र रहना हैं। स्वतंत्रता की अनिर्वाय शर्त है, राष्ट्रीय एकता राष्ट्रीय ऐकता के लिए लोकतंत्र जरूरी है। पंथनिरपेक्षता लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता का अटूट हिस्सा है। मैं और मेरी सरकार इन चारों तत्वों के प्रति प्रतिबद्ध है। हम हर तरह की सामप्रदायिकता के विरुध हैं, और जो समुदाय संख्या में कम हैं, उनकी पूरी सुरक्षा, विकास में भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। हमें ये कभी नहीं भुलना चाहिए है कि हम एक राष्ट्र के नागरीक हैं। लद्दाक से लेकर निकोबार तक फैला हुआ ये देश। गारो पर्वत से लेकर गिलगित तक इसका विस्तार है। ये एक प्राचीन देश है। इसकी सभ्यता और संस्कृति पाँच हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है। इतना विशाल देश, इतनी विविधताओं से भरा हुआ देश, भाषाओं, उपासना, पद्धितियों, रहन-सहन, खान-पान की विभिन्नताओं के बावजूद लोकतंत्र के सूत्र में बंधकर सामाजिक और आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए कमर कसकर जुटा हुआ है। साथ-साथ हम इसे भी नहीं भुल सकते कि हमें जनतंत्र को विक्रितीयों से बचाना है। हम संसद और विधानमण्डलो के सदनो में ऐसा व्यवहार करते हैं, जिसे स्कूल की कक्षा में कोई भी शिक्षक कभी बरदाश नहीं करेगा। लोकशाही चर्चा से चलने वाली है। विपक्ष को कहने का और सत्तापक्ष को करने अधिकार होना चाहिए। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, विरोधक नहीं। निर्भय और निष्पक्ष मतदान को और निखारना होगा। चुनाव पद्धति में परिवर्तन कर, उसे जातिवाद, हिंसा, धन शक्ति आदि दुरगुणों से मुक्त करना होगा। इससे अगली शताब्दी में हमारा शासन तंत्र और भी निखर कर आये।

एक समय था, यह देश सोने की चिडिया कहाँ जाता था, बाद में स्थिति बिगड़ी और हम गरीब राष्ट्रों में गिने जाने लगे। गत कुछ वर्षो में हमारे किसानों और खेतीहर मजदूरों ने कड़ी मेहनत करके, देश को खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया है। भूखे पेट कोई सैना लड़ नहीं सकती। भूखा देश चैन से नीद नहीं सो सकता। हमारे किसान मजदूर भाईयों ने देश को अनाज में आत्मनिर्भर बनाकर अपनी अन्नदाता की उपाधी सार्थक की है। मैं तो भगवान से केवल इतनी प्रार्थना कर सका हूँ। अन्न दाता सुखी भव। इस आन्नद में भी दुख की छाया छिपी है। आज हमारे इस अन्नदाता की स्थिति विकट हुई है। मुझे इस बात की अत्यधिक पीड़ा है। इस वर्ष कुछ प्रांतो में किसानों को कर्ज का बोझ

असहयी होने के कारण आत्महत्या करनी पड़ी। मैं इनके परिवारों के प्रति अपनी सम्वेदना प्रकट करता हूँ। इन किसानों को श्रद्धांजली के रूप में मैंने एक निर्णय लिया है। फसल बीमा योजना का विस्तार किया जाएगा। नयी फसलें इसमें जोड़ी जाएंगी, और भौगोलिक क्षेत्रों में भी इसे बढ़ाया जाएगा। किसानों की सही आर्थिक स्थिति की जाँच पड़ताल करने के लिए और उसमें सुधार के सुझाव देने के लिए, एक उच्चाधिकार समपन्न आयोग गठित किया जाएगा। मैं किसान भइयो को आस्वस्त करना चाहता हूँ। आप हमारे देश के रीड की हड्डी हैं। आपको इस शासन में कभी भी झुकने की नोबत नहीं आएगी। उडिसा में बोलंगीर, कालाहांजी, कुड़ापुट एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ आज भी लोग भूख से लोग पिडित हैं।

स्वतंत्रता के 50 वर्षों के बाद भी, देश में लोग भुखे रहें, ये हम कल्पना भी नहीं कर सकते। मैंने योजना आयोग से कहा है कि इस क्षेत्र में रोजगार आश्वासन योजना की रकम दुगनी कर दें। मेरा प्रयास रहेगा कि देश में अन्न के अभाव में किसी को भी अपनी जान न खोनी पड़े। व्यापार उद्योग और सेवाओं भी देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। हमारे कुछ उद्योग तो विश्व की स्पर्धा में अपने झण्डे गाड़ रहे हैं। इस सफलता के लिए में सभी मजदूरों, कर्मचारीयों, प्रबंधको, उद्योगपतियों व्यापारीयों को बहुत बधाई देता हूँ। लेकिन हम जानते हैं, ये सफलता एक पड़ाव है। अतिंम लक्ष्य की प्राप्ति नहीं। हमारा अतिंम लक्ष्य है भारत को एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में दुनिया में उभारना। मैं जानता हूँ कि ये कहना जितना आसान है, करना कठिन है। इसके लिए हमे कठोर परिश्रम प्रामाणिकता स्वावलम्बन का मार्ग अपनाना होगा। विश्व के दर्जे का माल तैयार करना पड़ेगा। जो घरेलू और विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सके। अर्थ व्यवस्था में सुधार की तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत है।

लेकिन हम उदारीकरण का अनुचित लाभ नहीं उठाने देंगे। आधारभूत ढांचे के क्षेत्र में हमने परियोजनाओं को तिव्रता से लागू करने का निर्णय किया है। स्वदेशी का अर्थ ये नहीं है कि हम कूपमण्डूक हो जायें। नयी दुनिया छोटा सा गाँव बन गयी है। हम सब एक दूसरे पर निर्भर हैं। हम इस खुली अर्थव्यवस्था में भी अपनी आंतरिक शक्ति के आधार पर विश्व स्पर्धा में दट कर खड़े रह सकते है। और हम दटकर खड़े रहेंगे ऐसा हमारा विश्वास है। आज के स्वतंत्रता दिवस की 51वीं वर्षगाठ केवल हमारे देश में नहीं दुनिया भर में मनाई जा रही है। हर देश में बसा भारतीय मूल नागरीक ये पावन पर्व हर्ष और उल्लास के साथ मना रहा है। मैं विदेशों में बसे सभी भारतीय को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ देता हूँ। इनमें से कुछ देशों में भाई-बहन हमारे इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण टीवी पर देख रहे होंगे। अनिवासी भारतीयों ने जहां भी बसे हैं, उन देशों की अर्थव्यवस्था में मजबूती लाई है। अब उन्हें भारत की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करने का अवसर मिला है। हमने विसरजय इण्डिया बॉन्ड्स निकाले हैं। दुनिया भर में बसे अनिवासी भारतीय इस अवसर का लाभ उठा रहे हैं। अभी तक इस योजना में 5 हजार करोड़ रुपये विदेशी मुद्रा के रूप में आये हैं। मुझे विश्वास है कि अनिवासी भारतीय और भी इसका लाभ उठायेंगे। देश का आर्थिक विकास अपने साथ-साथ कुछ समस्याएँ भी लेकर आता है। हमें उन्हें हल करना है। मैं जनता हूं कि आप सब और खासकर बहने, कुछ चीजों की बढ़ती किमतों से परेशान हैं। मैं आप की परेशानी समझ सकता हूँ। इसमें सरकार से ज्यादा प्रकृति का दोष है। लेकिन मैं समझता हूँ कि ये कहने से अपका बोझ तो हलका नहीं होता। वित्तमंत्रालय और राज्य सरकारें मिलकर इस महंगाई से जूझने का अभियान शुरू करेंगी। व्यापारी वर्ग से भी अब मैं इसमें सहयोग चाहत हूँ। वो अनावश्यक जमाखोरी और मुनाफाखोरी को बढ़ावा न दें। हम ऐसे तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने में हिचखिचाहट नहीं करेंगे।

मैं जानता हूँ कि आने वाले दिन त्यौहारों के दिन हैं। मेरी ये कोशिश होगी कि ये बढ़ती महंगाई आपके त्यौहारों का रंग फीका न कर दे। देश में एक और महत्वपूर्ण समस्या है भ्रष्टाचार की।

भ्रष्टाचार का रोग देश को कैंसर रोग के समान खाये जा रहा है। हमने इससे लड़ने का निर्णय लिया है। इसका आरम्भ ऊपर से किया है। लोकसभा में पेस किये लोकपाल विधेयक में, मैंने प्रधानमंत्री को भी नहीं बख्शा है। इससे हमने उच्चस्तरीय भ्रष्टाचार से लड़ने की हमारी नीति और नियत स्पष्ट की है। इसके साथ हम अफ्सरशाही के भ्रष्टाचार से भी लड़ना चाहते हैं। मैं जल्द ही प्रधानमंत्री कार्यालय के उस कक्ष के क्रियान्वयन में तेजी लाउंगा। जो भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही की देख-रेख करता है।

बेरोजगारी हटाओ ये हमारी राष्ट्र की एजेण्डा का महत्वपूर्ण सकंल्प है। बेरोजगारी बड़ी समस्या है। ये सब के जीवन के साथ जुड़ी है। सबके न्यूतम बुनियादी आव्यश्यकताओं की पूर्ती करने का भी यही तरीका है। पूर्ण रोजगार के लिए योजना बनाना कठिन जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। लेकिन इसके लिए नियोजन की पूरी प्रक्रिया में परिवर्तन करना होगा। बुनियादी जरूरत की चीजों और सेवाओं उत्पादन बुनियादी जरूरत की सेवाओं द्वारा ही होना चाहिए। जनसाधारण द्वारा होना चाहिए। इसके लिए विज्ञान और टैक्नोलोजी की सहायता लेनी पड़ेगी। सरकार का फैसला है कि 10 सालों में, 10 करोड़ लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाएंगे। इसका अर्थ ये हुआ के एक वर्ष में एक करोड़ लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाएंगे। इसके लिए एक टास्क फोर्स गठित की जायेगी। जो सिघ्र ही अपनी रिर्पोट प्रस्तुत करेगी। किसी भी आधुनिक समाज की प्रगति का मापदण्ड उस समाज में महिलाओं की स्थिति से होता है। हमने महिलाओं को संसद और विधानसभाओं में 33 फीसदी आरक्षण देने का वादा किया था। हमें खेद है कि हम इसे अभी तक पूरा नहीं कर सके हैं। लड़कियों को स्नातक स्तर तक मुफ्त की शिक्षा देने का निर्णय तो हम ले ही चुके हैं। अब हम एक और बड़ा कदम उठाने जा रहे है। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली सभी छात्राओं को उनकी क्रमिक पुस्तकें मुफ्त दी जायेंगी। इस पर 550 करोड़ रुपये खर्च किये जायेंगे। महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक महिला कल्याण बिमा योजना 'राज राजेश्वरी' और लड़कियों के लिए एक विषेश योजना 'भाग्यश्री' इसी वर्ष दिवाली के आनंद पर्व पर शुरू की जाएगी। इस योजना के लिए केवल एक महिने के लिए 1 रुपया देना होगा। आव्यश्यकता होने पर वो 1 रुपया देने वाले को 25,000 हजार रुपये के रूप में मिल सकेगा। इसका पूरा विवरण शीघ्र ही आपके सामने रखा जाएगा। अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों को बराबरी और भागीदारी का दिलाने के लिए हमने नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान तो किया है। लेकिन उसका क्रियान्वयन बहुत धीमें से होता है। मेरी सरकार का यह प्रयास रहेगा कि इस क्रियान्वयन में तेजी लाए जाये। और इन वर्गो का नौकरियों में प्रतिशत जल्दी से जल्दी पूरा किया जाए। शासनतंत्र को इन वर्गो के प्रति अधिक संवेदनशील और जवाबदेह बनाया जाएगा। युवा शक्ति ही राष्ट्र की शक्ति है, देश का भविष्य है। बहुत वर्ष पहले मैंने एक बाबा आत्मी का एक वाक्य पढ़ा था, 'हाथ लगे निर्माण में, नहीं मांगने, मारने' हमारी भी यही इच्छा है। भारत के युवक युवतियों उन्होंने न किसी के सामने हाथ फैलाना चाहिए। ना किसी पर अपने हाथों का जोर आजमाना चाहिए। सिर्फ अपने आप को राष्ट्र के पुनर्निर्माण के काम में झोंक देना चाहिए। इसी लिए तो हमने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण वाहिनी के गठन की योजना बनाई है। 18 से 35 वर्ष की आयु के युवक, युवतिया इसमें सम्मिलित हो सकेंगे।

ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में आधारभूत सेवाएं। पर्यावरण की रक्षा करना, जनसंख्या के सवाल पर जनअभियान, नशीली दवाओं के प्रभाव में लड़ना, शिक्षा का प्रसार, दलित बनवासी महिला का उत्थान, खेल, कला, संस्कृति आदि क्षेत्रों में ये युवक युवतिया काम कर सकेंगी। इसके लिए इन्हें मानधन भी मिलेगा। प्रारम्भ में कुछ जिलों में और अन्तत: सारे देश में ये योजना लागू की जएगी। 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द का जन्म हुआ था। उसे हम उसी रूप में मनाते है। इस दिन से इस योजना का

शुभारंभ होगा। युवक युवतियों का मैं आह्वान करता हूँ। आइये, अपने यौवन का एक वर्ष देश को दान कर दीजिए और राष्ट्र को पुनर्यौवन प्रदान कर दीजिए। (तालियां)...

21वीं सदी हमें दस्तक दे रही है। ये सदी सूचना की तकनीक की सदी होगी। भारत की सबसे बड़ी शक्ति है, भारत की बुद्धिमत्ता। विज्ञान और टैक्नोलोजी में प्रशिक्षित व्यक्ति की दृष्टि से विश्व में हमारा तीसरा स्थान है। हमें इस शक्ति को दोहन करना होगा। मेरी सरकार ने सूचना तकनीक के क्षेत्र में अनेक नये कदम उठाये हैं। हमारी आकांक्षा है सूचना तकनीक में महाशक्ति बनना। इस दृष्टि से मैं आज एक नये कदम की घोषण कर रहा हूँ। अन्तरिक्ष एक नया क्षेत्र है। जो अगली सदी में मानव जाति को नयी-नयी सम्भावनाओ को तलाशने का मौका दे रहा है। अन्तरिक्ष प्रद्योगिकी की काफी लाभ हैं। इसे भारत को अपनी युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करने के उपयोग में लाना होगा। मेरी सरकार जयविज्ञान के नारे के आधार पर युवाओं के सपने साकार करना चाहती है। इस दिशा में हम स्वर्ण जयंती विद्या विकास अंतरिक्ष उपग्रह योजना नामक एक नये उपग्रह पर आधारित कार्यक्रम शुरू करेंगे। इस कार्यक्रम का पहला उपग्रह इनसेट-3बी भारतीय अतंरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो द्वारा 15 अगस्त 1999 से पुर्व 12 महिने के एक रिकोर्ड समय में बनाकर, अंतरिक्ष में छोड़ा जाएगा। इस उपग्रह में 6 trans-founder operation knowledge को कार्यवाहित करने के लिए अलग से उपलब्ध होंगे। जिसका लक्ष्य देश में सभी विद्यार्थीयों के लिए computer, internet तथा computer पर आधारित शिक्षा प्रदान करना होगा। विषेश रूप से सभी विश्वविद्यालयों, इंजीनियर कालेजों, चिकित्सा कालेजों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं तथा उच्च शिक्षा केन्द्रों को स्वतंत्रता दिवस के पहले सूचना तकनीक नैटवर्क से जोड़ दिया जायेगा। इस कार्यक्रम से राज्यसरकारों की विकास सम्बंधी संचार आव्यश्यकतायें भी पूरी होंगी। आज महर्षि अरविन्द की 125वी जयंती समारोह का समापन होने जा रहा है। उन्होंने भारत के अध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृति प्रोग्रेशन की कल्पना की थी। आज हम उनकी कल्पनाओं को साकार बनाने का संकल्प करें। एक बार भारत रत्न डा0 बाबासाहेब अंबेडकर जी ने कहा था, 'आर्थिक और सामाजिक आजादी के बिना राजनीतिक आजादी अधूरी है।' आज राजनीतिक स्वतंत्रता दिवस पर हम इस देय वाक्य को भुले नहीं। बीती हुई अर्धशताब्दी में हमने अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता को अक्षुण रखी, लेकिन आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई अभी तक नहीं जीत सके हैं। हम देश को गरीबी से मुक्त नहीं करा सके हैं। बेरोजगारी अभी भी अभिशाप बनी हुई है। निरक्षरता का कलंक आज भी हमें मिटा नहीं सका है। जातिवाद और संप्रदाय का भूत अभी भी बीच-बीच में सर उठाता है। आइये, हम सब मिलकर स्वतंत्रता की दूसरी अर्धशताब्दी के प्रथम स्वतंत्रता दिवस पर प्रतिज्ञा करें कि 50 वर्षों पूर्व हमने राजनीति स्वतंत्रता की लड़ाई जीती थी। अब हमारा उदेश्य होगा आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई जीतना। प्रधानमंत्री के अभी तक इस छोटे से कार्यकाल में मैंने सब को साथ लेकर चलने का प्रयास किया है। आम सहमति की राजनीति हमारी राजनीति है।

कावेरी का ही उदाहरण लें, वर्षो से करनाटक, तमिलनाडु, केरल और पांडुचेरी के बीच में कावेरी के जल को लेकर विवाद चला आ रहा था। कभी-कभी तो विवाद ने अत्यन्त उग्ररूप धारण कर लिया। जहाँ की आग लगती है वहा पानी से उसे भुजाने की उसे कोशिश की जाती है। लेकिन जब पानी में ही आग लग जाये तो उसका इलाज क्या है? इलाज है, समझदारी, भाईचारा, सहनशीलता, देशभक्ति और अपने हितों के साथ दूसरे के हितों के बारे में सोचना। हाल में हुआ कावेरी का समझौता इसी का परिचायक है। क्या ये आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे अनेक नदियों का पानी समुद्र में चला जाता है और हम किसको कितना पानी मिले, हम इस विवाद में उलझे हुए हैं। वर्षो से ये विवाद पड़े हुए हैं। इस स्थिति को बदलना होगा। हमारी नदीयाँ जो हिन्दुस्तान के राज्य को जोड़ती हैं, उन्हें हिन्दुस्तानियों के दिलों को भी जोडना चाहिए। एक राष्ट्रीय जलनीति बनाने की

आव्यश्यकता है। हमने ऐसी नीति बनाने का वादा किया है। लेकिन ये सबके सहयोग और धीरज से ही सम्भव हो सकता है।

मेरी सरकार लगभग पिछले 5 महीनो में शासन के राष्ट्रीय एजण्डे में किये गये वादों को पूरा करने के लिए बड़ी गंभीरता से प्रयास करती रही है। हमारी सरकार मिली-जुली सरकार है। मिली-जुली सरकार का अपना धर्म होता है। जिसका निष्ठा पूर्वक पालन होना चाहिए। हमने अपने गठबंधन के लिए एक साझा कार्यक्रम, यानी एक नेशनल एजण्डा तैयार किया। हमने सभी विवादस्पद मुद्दो को इस अजंडे से बाहर रखा है। आज तक हमने जो भी किया है, वो राष्ट्रीय हित में किया है। हमने हमेशा राष्ट्रीय हित को दल हित से और व्यक्तिगत हित से ऊपर माना है।

राष्ट्र आज एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। आज हमारी पूरी राजनीतिक और शासकिय व्यवस्था एक गंभीर चुनौती के दौर से जा रही है। ऐसी स्थिति में हरेक दल को और हरेक राजनेता को जिम्मेदारी के साथ चलना होगा। राष्ट्र को चोट पहुँचाने वाले किसी भी कार्य के लिए इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा। आम जनता को भी चाहिए कि वो मौजूदा राजनीति और शासकिय व्यवस्था के बारे में गंभीरता से सोचे। हम सब के सामने कुछ बुनियादी सवाल हैं। क्या बार-बार चुनाव होना देश के लिए अच्छी बात है? क्या इन चुनावों पर होने वाली भारी खर्च का बोझ बार-बार उठाना देश हित में है? मुझे प्रधानमंत्री का पद सम्भाले केवल 5 महिने हुए हैं। संसद में हमारा बहुमत बहुत कम है। मैं जानता हूं साझा सरकारों की मर्यादाएं होती है। मैं जानता हूँ कि आज की व्यवस्था में निर्दोष सन्यासी को सत्तापिपासू फाँसी चढ़ा देते हैं। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि मैंने जीवन में कभी सत्ता के लालच में सिद्धान्तों के साथ सौदा नहीं किया। ....(तालियां) और न मैं भविष्य में करूंगा। सत्ता का सहवास या विपक्ष का बनवास मेरे लिए एक जैसा है। मैं 40 साल तक विपक्ष में रहा और अपने कर्तव्य का पालन करता रहा। मेरे विरोधी भी उसकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन वैसा विरोध आज मुझे दिखाई नहीं देता, जब मैं प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठा हूँ। ये परिवर्तन क्यों हो गया है। आज मुझे डॉ. शिव मंगलसिंह सुमन की एक कविता याद आती है "क्या हार में, क्या जीत में, क्या हार में, क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं। कर्तव्य पथ पर जो मिले, यह भी सही, वह भी सही, वरदान मांगूगा नहीं। वरदान मांगूगा नहीं।" .... (तालियां)

मित्रों, मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूँ। कितनी भी आपत्तिया आयें, हम वरदान के लिए झोली नहीं फैलाएंगे। आखिरी क्षण तक वरदान की तलाश नहीं करेंगे। न मैं संघर्ष का रास्ता छोड़ूंगा। बस मुझे आपका साथ चाहिए। भारत की 100 करोड़ जनता का आशीर्वाद चाहिए। जीवन में ऐसा क्षण आता है जब व्यक्ति चौराहे पर खड़ा होकर सोचता है, "राह कौन सी जाऊं मैं, चौराहे पर लुटता जीव, प्यादे से पीट गया वजीर, चलूं आखिरी चाल की बाजी छोड़ विरक्त रचाऊं मैं, राह कौन सी जाऊं मैं" (तालियां)... फिर लगता नहीं बाजी छोड़कर मैं विरक्ती में नहीं जा सकता। मुझे जूझना होगा। फिर मैं लाल किले की प्राचीर से आपकी उपस्थिति में अपने संकल्प को दोहराता हूँ। हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा, काल के कपाल पर लिखता, मिटाता हूँ। गीत नया गाता हूँ। (तालियां)...

बहुत-बहुत धन्यवाद